International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182 Print ISSN: 2349-5979
Impact Factor: RJIF: 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 2; February 2016; Page No. 150-152

मतिराम का काव्य वैभव

डॉ. शिवदत्त शर्मा

पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, ढलियारा, कांगडा, हि.प्र.

रीति काल में अनेक प्रसिद्ध कवि हुए जिन्होंने इस काल में महत्वपूर्ण रचनाएं लिख कर हिन्दी साहित्य को स्मृद्ध किया। मतिराम भी ऐसे महान कवियों में से हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से महत्वपूर्ण रचनाएं रीति काल में हिन्दी साहित्य को दीं जिनके लिए हिन्दी साहित्य इनका ऋणी रहेगा। आचार्य मतिराम 1604 ई में उत्तरप्रदेश के फतेहपुर के बर्न पुर नामक स्थान पर पैदा हुए थे। पिता विश्वानाथ त्रिपाठी भी साहित्यिक प्रेमी थे। इन्होंने श्रृगाररस को रसराज मानकर उसका सांगो पांग विवेचन किया। मतिराम अनेक राजदरबारों में रहे तथा प्रभूत सम्मान प्राप्त किया। सम्राट जहांगीर, बूंदीनरेश भावसिंह हांडा, कुमायूं नरेश ज्ञानचन्द आदि का नाम आश्रय दाताओं में अग्रगण्य है।[1]

आचार्य मतिराम आचार्य देवदत्त की तरह ही आचार्य एवं कवि दोनों रूप में विख्यात हैं। आचार्य मतिराम द्वारा रचा गया साहित्य नवीनतम अनुसन्धानों के अनुसार इस प्रकार है–

1. फूल मंजरी
2. लक्षण मंजरी
3. साहित्यसार
4. रसराज
5. ललित ललाम
6. अलंकार पंचाशिका
7. सतसई
8. वृत्त कौमुदी

उपरोक्त वर्णित आठ ग्रंथों में दो ग्रंथ लक्षण मंजरी तथा साहित्य सार आज उपलब्ध नहीं हैं। मतिराम का साहित्य प्रायः राज्याश्रित ही रचा गया है। सम्राट जहांगीर की आज्ञा से सन् 1619 ई में फूल मंजरी ग्रंथ की रचना इन्होंने की थी। सन् 1663 के आसपास राजा भाव सिह के दरबार में रहकर अलंकार पंचाशिका व वृत्त कौमुदी को किसी अन्य मतिराम की रचना सिद्ध करने का असफल प्रयास किया गया था, जो आधुनिक खोजों से भ्रामक सिद्ध हो चुका है।

आचार्य के रूप में मतिराम का योग दान

आचार्य मतिराम ने ललित ललाम में अलंकारों का विवेचन किया हे। यद्यपि मतिराम ने अलंकारों के लक्षण दोहे छन्दों में दिए हैं और उनके उदाहरण में कवित्त व सवैयों का सुन्दर प्रयोग किया है परन्तु अलंकार के शास्त्रीय विवेचन की दृष्टि से इस ग्रंथ का कोई विशेष महत्व नहीं हे। आचार्य मतिराम द्वारा लिखा हुआ रसराज लक्षणग्रंथ ही वास्तव में उनकी ख्याति का मुख्य आधार हे। इस ग्रंथ में श्रृंगार–रस, उसके आलम्बन नायक–नायिका के भेदों का सांगोपांग विवेचन किया गया है। मतिराम ने भानुदत्त कृत रसमंजरी व रहीम द्वारा लिखित बरवै नायिका के आधार पर नायिका व नायक को श्रृगाार आलम्बन के रूप में स्वीकार किया है,फिर भी इतना अवश्य कहा जा सकता हे कि मतिराम ने अपने पूर्ववर्ती लक्षण ग्रंथों का अन्धानुकरण नहीं किया है। भानुदत्त कृत रसमंजरी में वर्णित गुप्ता नायिका के तीन भेदों में से दो भेदों वर्तिष्यमाणवुत्त आदि को छोड दिया है। उन्होंने इसमें संचारी भावों का उल्लेख नहीं किया है।

मतिराम ने फूलमंजरी में फूल को आधार बना कर श्लेष अलंकार का प्रयोग करते हुए नायिका के सौंदर्य का वर्णन किया है–

> जाको वर्णन कीजिए सो, उपमेय प्रमान।
> जाकी समता दीजिए, ताहि कहत उपमान।
> जहां बरनिये वुहुन की, सम छवि को उल्लास।
> पंडित कवि मतिराम वह, उपमा कहत प्रकाश।[2]

नायिका भेद का विवेचन इसी प्रकार बडी विद्वता पूर्ण किया गया है–

> कुन्दन को रंग फीकौ लागे, झलके अति अंगनि चारू गोराई।
> आंखिन में अलसानि, चितौन में मंजु विलासन की सरपासाई।
> को बिनु मोल बिकात नहीं मतिराम लहे मुसकानि मिठाई।
> ज्यों–ज्यों निहारिये, नेरे है नैननि त्यौं–त्यौं निकरै–सी निकाई।[3]

मतितराम के काव्य की विशेषताएं

रीति बद्ध कवियों में मतिराम का स्थान प्रथम पंक्ति में गिना जाता है। रीति बद्ध अन्य कवियों की भान्ति इनमें भी प्रायः सभी विशेषताएं पाई जाती है जिनका सविस्तार वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है–

काव्य में श्रृंगार निरूपण

रसराज और ललितललाम में काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों का विवेचन मिलता है परन्तु मतिराम मूलतः श्रृंगार के कवि हैं, तथा प्रायः सभी रचनाओं में श्रृंगार रस निरूपण स्वतः ही उभर कर सामने आ जाता है। उनका मुख्य प्रतिपाद्य ही श्रृंगार है ऐसा कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। मतिराम ने नायिका–भेद का वर्णन बहुत सुन्दर ढंग से किया है। यद्यपि नायिका भेद में कोई मौलिकता दिखाई नहीं देती फिर भी इस प्रयास में दिए गए उदाहरण बहुत सुन्दर हैं। मतिराम ने नायिका भेद के वर्णन में नख–शिख वर्णन करते हुए नख–शिख वर्णन पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। रसराज में नायिका का वर्णन करते हुए उस के रूप–सौन्दर्य का क्षण–क्षण रूप सौन्दर्य किस प्रकार परिवर्तित हो रहा है इसका मोहक वर्णन किया है। उसके सुन्दर गौर वर्णन के साम्ने कुन्दन भी तिरस्कृत हो रहा है–

> कुन्दन को रंग फीकौ लगै, झलके अति अंगनिचरू गोराई।
> आंखिन में अलसानि, चितौन में मंजु विलासन की सरासाई।

को बिनु मोल बिकात नहीं, मतिराम लहै मुसकानि मिठाई,
ज्यौं–ज्यौं निहारिये, नेरे हैं नैननि त्यौं–त्यौं निकरै–सी निकाई।[4]

मतिराम के काव्य में भाव रस

मतिराम के काव्य की विशेषता है कि वे अनावश्यक शब्दों का आडम्बर नहीं करते। उनकी कविता सुकुमार एवं सुन्दर कल्पनाओं से आप्लावित है। आचार्य शुक्ल ने उनकी स्वाभाविक और सुन्दर भाषा के विषय में लिखा है– भाषा के समान मतिराम के न तो भाव कृत्रिम हैं न उसके व्यंजक, व्यापार और चेष्टाएं। भावों को आसमान में चढाने और दूर की कौडी लाने के फेर में वे नहीं पडे हैं। नायिका के विरह ताप को लेकर बिहारी के समान मजाक नहीं किया है। इनके भाव–व्यंजक व्यापारों की श्रृंखला सीधी और सरल है, बिहारी के समान चक्करदार नहीं।

मतिराम भाव निरूपण में अद्वितीय हैं। मतिराम सतसई से एक उदाहरण द्रष्टव्य है जिसमें लज्जा से लाल हुई नायिका का बडा सुन्दर वर्णन किया गया है–

क्यों इन आंखिन सों निसंक है, मोहन का तन पानिप पीजै।
नेकु निहारे कलंक लगे, इहि गांव बसे कहु कैसक जीजै।
ळोत रहै मनयों मतिराम कहुं गनजाई बडी तप कीजै।
है वनमाल हिए लगिए अरू है मुरली अधरस पीजै।[5]

काव्य में आश्रय दाताओं का यशोगान

मतिराम आजीवन अनेक आश्रयदाताओं के संरक्षण में रहे। सर्वप्रथम सम्राट जहांगीर के दरबार में कवि के रूप में रहे। उसके बाद बूंदी नरेश राव भाव सिंह हॉडा के दरबार के दरबारी कवि रहे। उसके बाद स्वरूप सिंह बुन्देला तथा महाराज शंभु नाथ सोलंकी के भी दरबारी कवि रहे। स्वाभाविक रूप से उन्होंने आश्रय दाताओं की प्रशंसा में अनेक प्रशस्तियां ओज पूर्ण भाषा में लिखीं। उन्होंने ललित ललाम की रचना रावभाउ सिंह के आश्रय में रहकर की थी। मति राम ने उस उस आश्रयदाता के सम्मान में प्रशस्तियां लिखीं। बूंदी नरेश भावसिंह का यशोगाान करते हुए मतिराम ने उनकी दानवीरता का प्रभूत वर्णन किया है।[6] एक दृष्टान्त देखिए–

दिन–दिन दूनी सम्पत्ति बढत जाति, ऐसो याको कहु कमला को बराबर है।
हेम हाय हाथी हीर बकसि अनूप निधि, भूपनि को करत भिखारिन को घर है।
मतिराम और जायक जहान सब,एक दाने सगु साल नन्दन कोकर है।
राव भावसिह के दान की बडाई देखि,कहा काम छन्द है काहुन सुत तरू है।

काव्य में पारिवारिक सम्बन्धों का मधुर चित्रण

मति राम ने अपने काव्य में पारिवारिक सम्बन्धों और पारिवारिक जीवन का बहुत सुन्दर चित्रण किया है। दाम्पत्य जीवन के चित्रण में तो मतिराम सिद्धहस्त हैं।रीति काल के कवि अतिशय श्रृंगार वर्णन में ही रूचि लेते रहे हैं परन्तु मतिराम दाम्पत्य जीवन के विशुद्ध, निष्कपट भावपूर्ण चित्रण में सफल रहे हैं। अनेक स्थलों पर कवि ने पतिपत्नी के प्रेम व्यापारों का बडा ही भाव पूर्ण चित्रण किया है। नायिका के हावभाव का चित्रण प्रशंस्य है।[7] एक उदाहरण उनकी अभिव्यंजना शक्ति को स्पष्ट कर देगा–

केलि के रति अघाने नहीं दि नही में लता पुनिघात लगाई।
प्यास लगी कोउ पानी दै जाइयो, भीतर बैठि के बात सुनाई।
जेठि पठाई गई दुलही, हंसि हेरि हरै मतिराम बुलाई।
कान्ह के बोल पे कान ने दीन्हीं, सुगेह की देहरि पै धरि आई।

मति राम के काव्य में प्रकृतिचित्रण

रीति कालीन कवियों में जिन कुछ एक कवियों ने श्रृंगार के अतिरिक्त प्रकृति चित्रण में भी रूचि दिखाई है उनमें मतिराम प्रमुख हैं। इनका प्रकृति चित्रण आधुनिक काल के प्रकुति चित्रण के समान नहीं है। मतिराम ने प्रकृति के आलम्बन, उद्दीपन और आलंकारिक रूपों का चित्रण करते हुए नायक–नायिका के हाव–भाव तथा उसकी मानसिक अवस्था का बडा प्रभाव शाली चित्रण किया है।[8]

कवि ने इसी तरह बसन्त ऋतु में एक नायिका की मनोगत भावनाओं का बडा ही सुन्दर और सफल वर्णन किया है। नायिका इस अवसर पर नहीं चाहती कि उसका नायक विदेश चला जाए। नायक के विदेश जाने की चर्चा मात्र ही नायिका को ऐसा लगता है कि मानो कलम के फूल आग बरसा रहे हों। नायिका अपने प्रियतम से कहती है–

मलय समीर लगो चलन सुगन्ध सीरो, पथि कन कीने परदेस ते आवनी।
मतिराम सुकवि समूहनि सुमन फूले, कोकिल मधुप लगे बोलन सुहावने।
आयो है बसन्त भए पल्लवित जलजा, तुम लागे चलिन की चरचा चलावने।
रावरी तिया को तरवर सरवन के, किसलय कमाल है वारक बिछावने।

मतिराम के काव्य में वीररस का वर्णन

मतिराम मुख्य रूप से श्रृगार के ही कवि हैं परन्तु यह भी स्मरण रखना परमावश्यक है कि वे दरबारी कवि थे अतः उनकी कविता में वीर रस न हो यह सम्भव नहीं है। उनका काव्य वीर रस से भी पूरित हे। मतिराम ने कुछ वीररस प्रधान कविताएं भी लिखीं हैं। इन कविताओं में मतिराम ने अपने आश्रयदाताओं की वीरता का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। वीरता के साथ दानवीरता का भी वर्णन अद्भुत है। बूंदीनरेश भावसिंह का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन उनकी कविता में मिलता है। अतिशय विवेचन से उनकी कविता की सुन्दरता क्षीण हुई है।[9] एक उदाहरण देखिए–

सूबन को मेटि दिल्ली देस दलिबे को धूम।
सुभट समूह निसि बाको उमहति है।
कहैं मतिराम ताहि रोकिबे को संगरमे,
काहू के हिम्मत हिए में उलझति है।

मतिराम के काव्य में भक्तिरस

मतिराम एक श्रृगारी कवि होने के साथ उच्च कोटि के भक्त भी थे। मतिराम शिव के अनन्य भक्त थे। आश्रय दाताओं की प्रसन्नता के लिए वे श्रृगार और वीर रस पूर्ण कविता लिखते रहे परन्तु उनके मन में आराध्य देव शिव के प्रति भक्ति–भाव सदैव विद्यमान रहा। उनके इस भाव का अनुमान इस पद्य के टुकडे से स्वयं ही अनुभव किया जा सकता है

तेरो कह्यो सिगरो मैं कियो निसि घोल तायो तिहुंतापन पाई।
मेरी कह्यो अब तूं करिजो सब दाह मिटे परि है सियराई।।
संकर पायनि में लागे रे मन मोरे ही बातनि सिद्धि सुहाई।
आक धतूरे के फूल चढाए ते रीझत है तिहुं लोक के साई।।

इसी तरह मतिराम ने श्री कृष्ण के रूपसौन्दर्य का भी बहुत सुन्दर वर्णन किया है। मतिराम इसी माध्यम से श्री कृष्ण की भक्ति का

प्रतिपादन करते हुए कहते हैं

मोरपंखा मतिराम किरीट में कण्ठ बनी बनमाल सुहाई।
मोहन कौ मुसकानि मनोहर कुण्डल डोलनि में छबि छाई।।

मतिराम के काव्य में भाषा और छन्द अलंकार

मतिराम कें काव्य में सुकुमार, और सुन्दर भाषा के दर्शन होते हैं। उनकी भाषा शुद्ध और प्रवाहमयी साहित्यिक ब्रजभाषा है। इनकी भाषा में शब्दाडम्बर नहीं मिलता। आचार्य रामचन्द्र ने इनकी भाषा के विषय में सुन्दर टिप्पणी की है–

रीति काल के प्रतिनिधि कवियों में पद्माकर को छोड कर और किसी कवि में मतिराम की चलती भाषा और सरल व्यंजना नहीं मिलती। बिहारी की प्रसिद्धि का कारण उनका वाग्वैदग्ध्य है। दूसरी बात उन्होंने दोहे कहें हैं। इससे उनमें वह नाद–सौन्दर्य नहीं आ सका, जो कवित्त, सवैये की लय, द्वारा संघटित होता हे।

मतिराम के काव्य से एक उदाहरण देखिए
बेलनि को लपटाए रही है, तमालन की अवधि अति कारी।
कोकिल केकी, कपोतन के कुल केलि करै अति आनन्द भारी।
सोच करे जानि, होउ सुखी मतिराम प्रवीन सबै नर नारी।
मंजुल बंजुल कुज में धन पुंज सखी ससुरारि तिहारी।

मतिराम का ब्रजभाषा पर अपूर्व अधिकार था। यही कारण है कि भाषा सौन्दर्य की दृष्टि से मतिराम श्रेष्ठ कवियों में गिने जाते हैं। मतिराम ने अपनी कविता में कवित्त और दोहों के अतिरिक्त सवैया छन्द का भरपूर प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त राजप्रशस्तियों में छप्पय और धना श्री छन्द का प्रयोग भी उन्होंने किया है।[10]

ललित ललाम को पढते ही मतिराम के अलंकार प्रिय होने का संकेत प्राप्त होने लगता है।मतिराम कभी कभी एक ही छन्द में एक से अधिक अलंकारों का प्रयोग करते प्रतीत होते हैं। अनुप्रास, उपमा, विभावना, यथासंख्य, प्रतीप, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का मतिराम ने भरपूर प्रयोग अपनी कविता में किया हैं। कुछ उदाहरण देखिए–

(क) उत्प्रेक्षा अलंकार

बाल रही इकटक निरखि ललित लाल मुख इन्दु।
रीझ भार अंखियों थकी झलके श्रम जल बिन्दु।

(ख) रूपक अलंकार

विप्रनि के मन्दिर न तजि करत ताव सब ठौर ।
भावसिंह भूपाल को तेज तरिन यह और।

इस तरह कहा जा सकता है कि मतिराम रीति काल के उल्लेखनीय कवि थे। रीति काल के कवियों में वे ऐसे कवियों में सम्मिलित हैं जिन्होंने श्रृगार के साथ साथ भक्ति को भी काव्य में सम्मिलित किया। इसके अतिरिक्त नीति, उपदेश और राजप्रशस्ति पर भी इन्होंने कविता लिखी। अपनी कविता में प्रकृति का भी सुन्दर चित्रण इन की कविता में मिलता है। इनकी सबसे बडी विशेषता इनके काव्य में सरलता, सहजता, दिखाई देती है।[11] उनकी काव्यभाषा में अलंकारों तथा छन्दों का सर्वोत्तम प्रयोग देखा जा सकता है। मतिराम रीति काल के रीति बद्ध कवियों में सर्वोच्च स्थान पर विराजित हैं इसमें सन्देह नहीं।

सन्दर्भ सूचि

1. डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 165
2. मतिराम फूलमंजरी पृ 17
3. मतिराम फूलमंजरी पृ 24
4. मतिराम रसराज पृ 34
5. मतिराम सतसई पृ 23
6. शिवदान सिंह चौहान हन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष पृ 78
7. डॉ बच्चन सिंह आधुनिक हिन्दी साहित्य पृ 123
8. डॉ भोला नाथ तिवारी हिन्दी साहित्य पृ 56
9. डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 90
10. डॉ गणपति चन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास पृ 49
11. डॉ राम खिलावन पाण्डे हिन्दी साहित्य का नया इतिहास पृ134